

बजरंग बाण

दोहा

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करें सनमान ।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करें हनुमान ॥

चौपाई

जय हनुमंत संत हितकारी, सुन लीजै प्रभु अरज हमारी ।
जन के काज विलम्ब न कीजे, आतुर दौरि महासुख दीजै ।
जैसे कूदि सिंधु बही पारा, सुरसा बदन पैठि बिस्तारा ।
आगे जाइ लंकिनी रोका, मारेहु लात गई सुर लोका ।
जाये विभीषण को सुख दीन्हा, सीता निरखि परम पद लीन्हा ।
बाग उजारि सिंधु मह बोरा, अति आतुर यम कातर तोरा ।
अक्षय कुमार को मारि संहारा, लूम लपेटि लंक को जारा ।
लाह समान लंक जरि गई, जय जय धुनि सुर पुर मह भई ।
अब बिलम्ब केहि कारण स्वामी, कृपा करहु उर अंतर्यामी ।
जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता, आतुर होइ दुःख करहुँ निपाता ।
जय गिरिधर जय जय सुख सागर, सुरसमूह समरथ भटनागर ।
ॐ हनु हनु हनु हनुमंत हठीले, बैरहि मारु बज्र की कीले ।
गदा बज्र लै बैरहि मारो, महाराज प्रभु दास उबारो ।
ॐ कार हुंकार महावीर धावो, बज्र गदा हाउ विलम्ब न लावो ।

ॐ ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीसा, ॐ हूं हूं हूं हनु अरिउर शीशा ।
सत्य होउ हरि सपथ पायके, रामदूत धरु मारु धाय के ।
जय जय जय हनुमंत अगाधा, दुःख पावत जन केहि अपराधा ।
पूजा जप तप नेम अचारा, नहि जानत कछु दास तुम्हारा ।
बन उपवन मग गिरि गृह माही, तुमरे बल हम डरपत नाही ।
पाय परों कर जोरि मानवो, यह अवसर अब केहि गेहरावो ।
जय अंजनि कुमार बलवंता, शंकर सुवन धीर हनुमंता ।
बदन कराल काल कुल घालक, राम सहाय सदा प्रति पालक ।
भूत प्रेत पिसाच निशाचर, अग्नि बैताल काल मारीमर ।
इन्हे मारुं तोहि सपथ राम की, राख नाथ मर्यादा नाम की ।
जनक सुता हरि दास कहावो, ताकि शपथ बिलम्ब न लावो ।
जय जय जय धुनि होत अकाशा, सुमिरत होत दुःसह दुःख नाशा ।
चरण शरण करि जोरि मानवो, यही अवसर अब केहि गोहरावों ।
उठु उठु चलु तोहि राम दोहाई, पाँय परों कर जोरि मनाई ।
ॐ चं चं चं चंपल चलन्ता, ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमंता ।
ॐ हं हं हाँक देत कपि चंचल। ॐ सं सं सहम पराने खल दल ।
अपने जन को तुरत उबारो, सुमिरत होय आनंद हमारो ।
यहि बजरंग बाण जेहि मारे, ताहि कहो फिरी कौन उबारो ।
पाठ करैं बजरंग बाण की, हनुमत रक्षा करैं प्राण की ।

यह बजरंग बाण जो जापै, तेहिते भूत प्रेत सब कापै ।
धुप देय अरु जपे हमेशा, ताके तन नहि रहें कलेशा ।

दोहा

प्रेम प्रतीतिहि कपि भजे, सदा धरें उर धयान ।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्धि करें हनुमान ।

॥ इति श्री बजरंग बाण समाप्त ॥